ISSN 2454 - 5163

स्वाध्याय मन्दिर, सोनगढ (गुज.)

26 मार्च 2021, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 39, अंक 9, कुल पृष्ठ 36

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

वीतराग–विज्ञान (452)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर – 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur67@gmail.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7000
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	10000

आत्मा का लक्षण

ज्ञान लक्षण आत्मा को प्रसिद्ध करता है; जिसे आत्मा के ज्ञान लक्षण की ही खबर नहीं है, उसे आत्मा की ही खबर नहीं है। ज्ञान लक्षण किसका है? ज्ञान लक्षण राग का या व्यवहार का नहीं है; परन्तु आत्मा का ही है। वह लक्षण शुद्ध आत्मा का ही लक्ष्य कराता है। जिसे ऐसे लक्षण की खबर नहीं है, उसे लक्ष्य की प्रसिद्धि नहीं होती। जो ज्ञान राग में एकाकार हो गया, उसे यहाँ ज्ञान ही नहीं कहते; यहाँ तो जो ज्ञान स्वोन्मुख होकर आत्मा को लक्ष्य बनाये उसी को आत्मा का लक्षण माना है और वह ज्ञान आत्मा के ज्ञान सहित पर को भी यथार्थरूप से जानता है। ज्ञान लक्षण से आत्मा को लक्षित न करे और मात्र जैनशासन में कहे हुए व्यवहार का ही लक्ष्य रखे तो उसे भी आत्मा के लक्षण की खबर नहीं है, इसलिये उसे आत्मा की प्रसिद्धि नहीं होती।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 8

वीतराग–विज्ञान

वीतराग–विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग–विज्ञान का , घर–घर होय प्रसार।।

वर्ष : 39 (वीर नि. संवत् – 2547) 452 अंक : 9

मुनि बन आये...

मुनि बन आये बना।।टेक।।
शिव वनरी व्याहनकौं उमगे, मोहित भविक जना।।
रतनत्रय सिर सेहरा बांधैं, सजि संवर बसना।
संग बराती द्वादश भावन, अरु दशधर्मपना।।
मुनि बन आये...।।1।।
सुमति नारि मिली मंगल गावत, अजपा गीत घना।
राग दोष की आतिशबाजी, छूटत अगनि–कना।।
मुनि बन आये...।।2।।
दुविधि कर्म का दान बटत है, तोषित लोकमना।
शुकल ध्यान की अगनि जला करि, होमैं कर्मघना।।
मुनि बन आये...।।3।।
शुभ बेल्यां शिव बनरि बरी मुनि, अद्भुत हरष बना।
निज मंदिर मैं निश्चल राजत 'बुधजन' त्याग घना।।
मुनि बन आये...।।4।।

– कविवर पण्डित बुधजनजी

श्री यशपालजी (अण्णाजी) - एक परिचय

महाराष्ट्र प्रांत में सांगली जिले के एक छोटे से नांद्रे गाँव में भीमगौंडा नामक होनहार बालक का जन्म हुआ। पिता का नाम श्री तात्यासो और माता का नाम सौ. पदुबाई, भाई का नाम रामगौंडा था। श्री भीमगौंडा ने अपना प्राथमिक शिक्षण नांद्रे गाँव में पूर्ण करने के बाद पिताजी की इच्छा के विरुद्ध घर से भागकर आगामी अध्ययन करने के लिए बाहुबली (कुंभोज) में गुरुकुल प्रणेता एवं संस्थापक आ. समंतभद्र के सान्निध्य में आगामी धार्मिक एवं लौकिक शिक्षा प्रारम्भ की।

सन् 1957 में दसवीं कक्षा पास करने के बाद गुरुकुल में ही रहकर प्राकृत एम.ए. तक का लौकिक अध्ययन किया और बाहुबली विद्यालय में 2 साल तक संस्कृत और धार्मिक विषयों का अध्यापन भी किया। सन् 1960-61 में समंतभद्र महाराज के साथ चातुर्मास हेतु पहाड़ पर ही रहकर ग्रंथाधिराज समयसार, मोक्षमार्गप्रकाशक, क्षत्रचूड़ामणि आदि ग्रंथों का आद्योपान्त अध्ययन किया और गुरुकुल-माता स्व. गजाबेन से गोम्मटसार आदि करणानुयोग ग्रंथों का भी स्वाध्याय किया। चार महीनों के स्वाध्याय से उनका मन इतना भीग गया कि उन्हें संसार से वैराग्य आ गया और उसी समय आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत अंगीकार कर लिया। इस परिणति को देखकर गुरुदेव ने उनका नाम परिवर्तन करके ब्र. यशपाल जैन रखा।

सन् 1963 में श्री 1008 भगवान बाहुबली की प्रतिमा पहाड़ पर स्थापित हुई। उससमय ब्र. यशपालजी ने छात्रों के साथ पहाड़ को वृक्ष, लताओं से सुशोभित किया और सायंकाल को छात्रों को धार्मिक रोचक कहानियों के माध्यम से धार्मिक संस्कार डालने का महान कार्य किया। उनकी इस प्रेरणामयी बातों से उन्हें सभी बड़े भाई के रूप में 'अण्णा' कहकर सम्बोधित करने लगे और यह भीमगौंडा 'ब्र. यशपाल अण्णा' के रूप में प्रसिद्ध हो गये।

अण्णाजी के जीवन का ध्येय मात्र धार्मिक विषय पढ़ना, पढ़ाना और लिखना ही रह गया। आ. गुरुदेव की आज्ञा से सन् 1970 से 1977 तक श्री पार्श्वनाथ ब्र. गुरुकुल बेरुळ (औरंगाबाद) के संचालक भी रहे। गरीब छात्रों के अध्ययनार्थ आर्थिक फंड के लिए मुनिश्री आर्यनंदी महाराज के साथ सम्पूर्ण भारत में 'तीर्थ संरक्षण फंड' के लिए विहार भी किया।

आ. समन्तभद्र की प्रेरणा से स्व. गजाबेन के साथ अनेक धार्मिक शिविरों में और सोनगढ़ में भी आने का मौका मिला। वहाँ अनेक विद्वानों के साथ स्व. पण्डित बाबूभाई मेहता का विशेष परिचय हुआ और उन्हीं की प्रेरणा से अध्यात्म और वैराग्यभावना को वृद्धिंगत करने के लिए 'स्वान्त: सुखाय' श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर आ गये। जयपुर में सन् 1981 से 1999 तक उनकी श्रद्धा आचरण और अध्ययन की रुचि को देखकर स्व. पण्डित नेमीचन्दजी पाटनी के बाद 1999 से 2003 तक ट्रस्टी तथा 2004 से आजीवन ट्रस्टी एवं प्रकाशन मंत्री का दायित्व प्रदान किया गया। तत्पश्चात् आपने आत्मकल्याण और तत्त्वप्रचार में ही अपना जीवन समर्पित किया। **– डॉ. नेमिनाथ शास्त्री, कुम्भोज-बाहुबली**

सम्पादकीय

भरत का अन्तर्द्वन्द

आठवाँ अध्याय

(गतांक से आगे ...)

ज्ञानियों का गृहस्थ जीवन अरे होता है दुधारु धार।
रे श्रद्धा निर्विकल्प रहती विकल्पों का अपार व्यापार।।
निरन्तर चलता रहता है इसे ही कहते हैं व्यवहार।
सन्तुलन कभी बिगड़ता नहीं नाव रहती है नित मझधार।। ४३।।

नाव रहती नित पानी में नाव में पानी रहता नहीं।
नाव में पानी रहता नहीं इसलिये नाव डूबती नहीं।।
अगर पानी अपार ना हो नाव फिर चल सकती है नहीं।
नाव में पानी आ जावे डूबने से बच सकती नहीं।। ४४।।

अरे ज्ञानी भवसागर में ज्ञान की नाव चलाते हैं।
ज्ञानियों के मनमन्दिर में भवोदधि रह सकता है नहीं।।
भवोदधि में ज्ञानी रहते ज्ञानि की दृष्टि में भव नहीं।
छोड़कर अपने आतम को ज्ञानि का मन लगता न कहीं।। ४५।।

कमल जल में ही रहता है कमल को जल छू सकता नहीं।
कमल का ही स्वभाव ऐसा कि उसको जल छू सकता नहीं।।
कमल पानी में डूबा रहे किन्तु वह सूखा रहता है।
कमल रूखे स्वभाव का है उसे पानी छू सकता नहीं।। ४६।।

अरे अस्पर्श स्वभावी जीव करम उसको छू सकते नहीं।
आतमा को छू ले कोई किसी में ऐसी शक्ति नहीं।।
करम उसको छू लें बाँधें करम में ऐसी शक्ति नहीं।
आतमा है अबद्ध-अनछुआ[१] बात यह प्रभो ! आपने कही।। ४७।।

मैं तो निश्चय से हूँ जीव करम मुझको छू सकते नहीं।
मैं हूँ अबद्धस्वभावी जीव करम से मैं बँध सकता नहीं।।
नहीं मैं करमों को बाँधू नहीं वे करम मुझे बाँधें।
यही है बात अरे परमार्थ और सब बातें हैं व्यवहार।। ४८।।

अरे मैं चक्रवर्ती हूँ नहीं अरे मैं निश्चय से हूँ जीव।
चक्रवर्तीपन है पर्याय और मैं हूँ निश्चय से द्रव्य।।
अरे पर्याय तो होती क्षणिक द्रव्य होता अविनाशी नित्य।
द्रव्य में मेरा अपनापन और पर्याय ज्ञान का ज्ञेय।। ४९।।

द्रव्य तो रहे निरन्तर नित्य किन्तु आनी-जानी पर्याय।
मैं तो हूँ अनादि का द्रव्य और यह चक्र अभी आया।।
मैं तो रहूँ अनन्ताकाल चक्र की अपनी सीमा है।
मैं तो हूँ असीम भगवान न मेरी कोई सीमा है।। ५०।।

भरत का भारत हो समृद्ध नहीं हो उसमें कोई कमी।
अरे जन-जन में हो वात्सल्य सभी के परिणामों में नमी।।
सभी श्रावक श्रावक का धर्म प्रेम से पालें, सुख से रहें।
धर्मसाधन में ही नित रहें और स्वाध्याय निरन्तर करें।। ५१।।

१. अबद्ध-अनछुआ = अबद्धस्पृष्ट ।

ऋषभ की दिव्यध्वनि का लाभ निरन्तर सबको मिलता रहे।
श्रवण कर सभी करें चिन्तन मनन घोलन अर अनुशीलन।।
और निज आतम को पहिचान उसी के मन्थन में नित रहें।
सभी जन हिल-मिल कर नित रहें न्याय-नीति से वर्तन करें।। ५२।।

रात्रि भोजन कोई ना करे सभी दिन में ही भोजन करें।
छने पानी का ही उपयोग सभी सीमित मात्रा में करें।।
जहाँ तक सम्भव हो सब लोग देवदर्शन-पूजन नित करें।
वीतरागी जिनवाणी का नियम से स्वाध्याय नित करें।। ५३।।

और हिंसा कोई ना करे झूठ भी कोई बोले नहीं।
परिग्रह भी सब सीमित रखें और चोरी कोई न करे।।
किसी की बहिन-बेटियों पर कभी खोटी निगाह ना रखे।
किसी से छेड़छाड़ ना करे स्वयं की मर्यादा में रहे।। ५४।।

दान भी यथायोग्य देवें शास्त्र की मर्यादा अनुसार।
अरे दें अनुद्दिष्ट आहार श्रमण को नवधा भक्ति से।।
श्रावकों को औषधि देवें निरन्तर देवें तत्त्वज्ञान।
अहिंसक जीवन से सबको सदा दें अरे अभय का दान।। ५५।।

श्रावकों के बारह व्रत लोग निरन्तर निरतिचार पालें।
धर्म की मर्यादा में रहें स्वयं के चित को समझा लें।।
आतमा में अपनापन रखें जगत से अपनापन तोड़ें।
निरन्तर विषय-कषायों से अरे अपने मन को मोड़ें।। ५६।।

मैं तो यही चाहता हूँ सभी को सब सुविधायें सहज।
सदा उपलब्ध रहें भगवन ! सभी का जीवन होवे सहज।।
सभी को जीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धि सहज।
प्राप्त हो तत्त्वज्ञान सर्वत्र आतमा की उपलब्धि सहज।। ५७।।

सभी निज आतम को जानें और अपने को पहिचानें।
स्वयं की रुची सभी को हो सभी को जानें पहिचानें।।
सभी की शुद्धभावना रहे धर्म का मर्म सभी जानें।
स्वयं की करें साधना नित्य स्वयं में स्वयं समा जावें।। ५८।।

यद्यपि परम सत्य यह बात किसी का कोई कुछ न करे।
किन्तु आये बिन रहते नहीं सभी का हित करने के भाव।।
किसी का हित कर सकते नहीं परन्तु हित करने के भाव।
श्रावकों के जीवन में नित्य निरन्तर आते रहते हैं।। ५९।।

यद्यपि कोई किसी को भी अरे ना मार-बचा सकता।
तथापि ज्ञानीजन को भी सदा रहते करुणा के भाव।।
अरे चौथे से छठवें तलक सदा ऐसा ही होता है।
ज्ञानिजन सभी जानते हैं अत: आकुलित नहीं होते।। ६०।।

देख ज्ञानीजन का व्यक्तित्व जगत को ऐसा लगता है।
बात तो ऐसी करते हैं और जीवन कैसा रहता?।।
कहें वे शुद्धभाव ही धरम शुभाशुभभाव वर्तते हैं।
अरे श्रावक के जीवन में सदा ऐसा ही होता है।। ६१।।

जगत को कौन कहे यह बात आपके बिना अरे जिनराज !।
कौन समझावे उनको नाथ अरे सम्यक् निश्चय-व्यवहार।।
सबको नहीं बताते आप तो कोई जान नहीं सकता।
अरे कितनी भी कोशिश करे सत्य पहिचान नहीं सकता।। ६२।।

आपकी वाणी में हे नाथ! ये बातें आतीं रहतीं हैं।
और शास्त्रों में भी तो प्रभो! यही सब लिक्खा रहता है।।
तथा ज्ञानी गुरुजन भी तो सदा समझाते रहते हैं।
यही कारण है हे जिननाथ! सभी यह बात जानते हैं।। ६३।।

अत: जिनवाणी का स्वाध्याय निरन्तर करते रहना है।
संगति ज्ञानी गुरुओं की निरन्तर हमको करना है।।
देव की पूजन करना है देव की भक्ति करना है।
और निज आतम का श्रद्धान-ध्यान हम सबको करना है।। ६४।।

आपने सब विकल्प तोड़े और अपने में ही जम गये।
आप तो निर्विकल्प हो गये आप अपने में ही रम गये।।
आप तो अपने में ही नाथ ! जमे सो जमे, जमे ही रहे।
आप तो अपने में हे नाथ ! रमे सो रमे, रमे ही रहे।। ६५।।

और आखिर में तुमने नाथ! अनन्तानन्द प्राप्त कर लिया।
नन्त दर्शन अनन्त बीरज अनन्ता ज्ञान प्राप्त कर लिया।।
आप हो गये पूर्ण स्वाधीन आप अरहन्त हो गये हैं।
अरे कृतकृत्य हो गये हैं कि मानों सिद्ध हो गये हैं।। ६६।।

आप हैं गुण अनन्त के पिण्ड निरन्तर भोगें परमानन्द।
नहीं है राग-द्वेष का नाम आप हैं वीतराग भगवन्त।।
अरे हे बाहुबली अरिहन्त ! आपने पाया भव का अन्त।
आप हैं नन्त वीर्य के धनी परमसुख भोगें काल अनन्त।। ६७।।

अरे हे बाहुबली जिनराज! आप तो पहुँचे भव से पार।
आप हैं सर्वश्रेष्ठ जिनराज आपकी महिमा अपरम्पार।।
आपका है अनन्त उपकार आपने बतलाया सन्मार्ग।
आपके बिना बतावे कौन अरे भव से मुक्ति का मार्ग।। ६८।।

आपके मारग से जिनराज! हमें भी होना है भव पार।
आपकी महिमा अपरंपार आपको नमस्कार शतबार।।
आपको नमस्कार शतबार आपको नमस्कार शतबार।
भरतजी कहते बारम्बार आपको नमस्कार शतबार।। ६९।।

(दोहा)

इसप्रकार भरतेश ने, भक्तिभाव के साथ।
बाहुबली की स्तुति, करके जोड़े हाथ।। ७०।।

अपने मन की भावना, निर्मल मन के साथ।
परगट करके अन्त में, उन्हें नवाया माथ।। ७१।।

-●-

यद्यपि पदार्थों के बीच का अन्तर जानना भेदविज्ञान है, तथापि जिन पदार्थों के बीच भेदविज्ञान किया जा रहा है, उनमें एक निज तत्त्व होना आवश्यक है। यही कारण है कि भेदविज्ञान को स्वपर विवेक भी कहते हैं।

स्व और पर के बीच का भेद जानना वास्तविक भेदविज्ञान है - मात्र दो पदार्थों के बीच का अन्तर जानना नहीं। **- चिन्तन की गहराईयाँ, पृष्ठ 20**

छहढाला प्रवचन

बोधिदुर्लभ भावना

अंतिम-ग्रीवकलौं की हद, पायो अनन्त विरियां पद।
पर सम्यग्ज्ञान न लाधौ, दुर्लभ निज में मुनि साधौ।।१३।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

जो जीव अपने सुख स्वभाव को भूलकर संयोगों और राग में सुख मानता है, वह निरन्तर दु:खी है। वह सोता हो या जागता हो, पाप करता हो या पुण्य करता हो; अज्ञान के कारण उसे दु:ख का ही वेदन है।

मिथ्यादृष्टि की भूमिका में होनेवाले शुभराग के असंख्य प्रकार हैं, उन सबको यह जीव अनन्त बार कर चुका है, उनमें कोई अपूर्वता या कल्याण नहीं है। शुभराग से विलक्षण चैतन्यस्वभाव के संवेदनरूप सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप बोधि अपूर्व है और कल्याणरूप है।

हे जीव! तू ऐसी बोधि का स्वरूप समझकर अपनी रुचि की दिशा बदल। अपनी चैतन्यधारा को रागरूपी कीचड़ की तरफ मत बहा, उसे वहाँ से पीछे लौटाकर आनन्द के समुद्र में मिला...तुझे आनन्द की प्राप्ति होगी।

अब और अधिक क्या कहा जाए? पाप के फल में विषाद मत कर और पुण्य के फल में फूल मत जा (हर्ष मत कर)। लाखों बात में यही एक बात सारभूत है कि जगत के द्वंद-फंद, राग-द्वेष छोड़कर अन्तर में अपने पवित्र आत्मा का ध्यान कर। इससे तुझे अपूर्व बोधि-समाधि प्राप्त होगी।

भगवान आत्मा के परम आनन्द स्वभाव को पहिचानकर, उसका चिन्तन कर, उसमें स्थिर होना ही बोधि है। सब शास्त्रों का यही सार है। स्वभाव सन्मुख होते ही अनादिकाल से भव-भ्रमण का अन्त आ जाता है और सम्यग्दर्शनपूर्वक मोक्षमार्ग का प्रारम्भ हो जाता है।

सारभूत और छोटी-सी बात इतनी है कि स्वभाव के सन्मुख हो और विभाव से विमुख हो। इसके बिना सब व्यर्थ की हाय-हाय है। शुभराग करने से भी भव का अन्त नहीं होता; क्योंकि उसमें भवबन्धन को तोड़ने की ताकत नहीं है। यह ताकत तो सम्यग्दर्शन में ही है।

सुलभ और दुर्लभ की व्याख्या निम्न शैलियों में की जा सकती है -

१. पुण्य के फल में बाह्य संयोग अनन्त बार मिले, इसलिए वे सुलभ हैं और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र आजतक नहीं हुए, अत: दुर्लभ हैं।

२. परद्रव्य का संयोग मिलना आत्मा के आधीन नहीं है; अत: वह दुर्लभ है और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र जीव के आधीन हैं, इसलिए सुलभ हैं।

उपर्युक्त दोनों विवक्षा समझकर स्वभाव की साधना का उद्यम करना चाहिए। दुर्लभ मानो या सुलभ मानो, अन्तर्मुख होकर आत्मा का अनुभव करना ही बोधि की प्राप्ति का एकमात्र उपाय है। इसी उपाय से अनन्तजीव मोक्षसुख प्राप्त कर चुके हैं, कर रहे हैं और करेंगे। अभी भी स्वानुभव द्वारा मोक्ष की साधना करनेवाले जीव हैं। मोक्ष का उपाय तीनों काल में एक ही है, उसमें पर के आश्रय की आवश्यकता कहीं नहीं है।

अहा! मोक्षमार्ग कितना सुन्दर और स्वाश्रित है। सभी जिनेन्द्र भगवन्तों ने इसी मार्ग द्वारा मोक्ष की साधना की है तथा मुमुक्षुओं के लिए भी इसी मार्ग का उपदेश दिया है।

अरे जीव! तेरी मोक्षसाधना में क्या परद्रव्य का आश्रय हो सकता है? वीतरागी मोक्षसुख की साधना में राग का आलम्बन हो सकता है? राग का सूक्ष्म अंश भी मोक्षमार्ग में विघ्न करनेवाला है। तेरी चैतन्य वस्तु में क्या कमी है, जो तुझे मुक्ति के लिए पर की आशा रखना पड़े।

भाई! तेरी वस्तु महान है, पूर्ण सामर्थ्यवान है और सुलभ है। उसके अनुभव में कोई क्लेश नहीं है, बोझा नहीं है; क्योंकि वह तुझसे दूर नहीं है। उसका अनुभव करने में पैसे खर्च नहीं होते, दूर देश में नहीं जाना पड़ता, कोई शारीरिक कष्ट भी नहीं होता, किसी से प्रार्थना भी नहीं करनी पड़ती।

इसप्रकार आत्मा के अनुभव में क्लेश तो कुछ भी नहीं है और उसका फल महा-सुखकारी है। ऐसा सुलभ अनुभव कौन नहीं करेगा? अरे! जिस अनुभव में मन का अवलम्बन नहीं है तो अन्य पदार्थों की क्या बात करना? इसलिए हे जीव ! तू शुद्धचिद्रूप का अनुभव कर - ऐसे आत्मानुभव की प्रेरणा तत्त्वज्ञान तरंगिणी में दी है।

अहा ! अत्यन्त आनन्दमय स्वानुभूति में पुण्य या राग की जरूरत नहीं पड़ती, इसके बिना ही स्वानुभव होता है। जीव को राग की ऐसी मिठास लगी है कि मानो पुण्य छोड़ने से धर्म का साधन छूट जाएगा।

अरे भाई! तेरा चैतन्यतत्त्व पुण्य में नहीं है, तेरी चेतना पुण्य के आधार से नहीं टिकी है, जो पुण्य छूटते ही तू निराधार हो जायेगा। पुण्य छूटने पर भी तू अपने चैतन्य उद्यान में केलि करेगा। पुण्य और राग के बिना तू दुखी नहीं होगा; बल्कि राग रहित परम सुख का अनुभव होगा।

देखो! अरहन्त और सिद्ध भगवान भी पुण्य बिना कैसे परम सुखी हैं। इससे सिद्ध होता है कि प्रत्येक आत्मा राग के बिना ही अपने चैतन्यस्वभाव से टिकनेवाला और सुखी होनेवाला है।

पुण्य या राग के बिना आत्मा मर नहीं जाता। पुण्य, आत्मा का जीवन या शरण नहीं है, पुण्य-पाप रहित चैतन्यस्वभाव ही शरणभूत है और उसी की शरण लेकर मुनिराज मोक्ष की साधना करते हैं।

समयसार के पुण्य-पाप अधिकार में यह बात बहुत अच्छी तरह समझाई है। वहाँ पुण्य को भी बन्ध का कारण सिद्ध करते हुए मोक्षमार्ग में उसका निषेध किया है, तब शिष्य पूछता है कि यदि पुण्य भी बन्ध का कारण है तो मोक्षमार्गी मुनिराज किसकी शरण लेंगे?

तब आचार्यदेव कहते हैं कि भाई! शुभाशुभकर्म छूटने पर मुनिराज अशरण नहीं हो जायेंगे, तब भी वे अपने ज्ञानस्वभाव की शरण लेकर अतीन्द्रिय निर्विकल्प परमानन्द-अमृत पीयेंगे। ऐसे रागरहित ज्ञान और आनन्द के स्वाद को ज्ञानी ही जानते हैं। रागादि कषाय में लीन अज्ञानी जीव उस आनन्द के स्वाद को नहीं जान सकते।

जिसप्रकार चैतन्यस्वभाव के अस्तित्व के लिए राग या पर की आवश्यकता नहीं है; उसीप्रकार उसकी अनुभूति के लिए भी परपदार्थ या राग की आवश्यकता नहीं है। अरे जीव! अपने स्वाधीन आत्मस्वभाव की ओर एक बार नजर तो कर। उसका विश्वास तो कर, परपदार्थों से दृष्टि उठा और अन्तर में विराजमान अपने परमात्मा पर दृष्टि दे। उस पर नजर करते ही तू निहाल हो जायेगा। अभी तक दुर्लभ तत्त्व तुझे सुलभ हो जायेगा।

अरे जीव ! इस समय आत्मसाधना का अपूर्व अवसर आया है, अब दूसरे कार्यों में उलझना ठीक नहीं। जिसप्रकार यदि घर में राजा आदि महान पुरुष आवें तो हम साधारण व्यक्तियों से बात करना छोड़कर, उनसे लक्ष्य हटाकर उन महान-पुरुष की ओर ही लक्ष्य रखते हैं, उनसे सम्मानपूर्वक बातें करते हैं, उनका स्वागत करते हुए बहुमान करते हैं कि 'आइये पधारिये...पधारिये, हमारी कुटिया पवित्र कीजिए।' यदि उनके सामने न देखकर, उनका उचित सम्मान न करके दूसरे काम में उलझ जायें तो उनका अनादर होगा; उसीप्रकार महान परमात्मारूप अपना चैतन्य भगवान अपने में विराजमान है, यह उसकी अनुभूति का अवसर है, इसलिए दूसरों का

प्रेम छोड़कर उसकी तरफ देख एवं अन्तर्मुख उपयोग द्वारा उसका परिचय कर तो वह प्रसन्न होकर तुझे सम्यक्त्वादि रत्न प्रदान करेगा।

यदि तू अपने चैतन्य महाराजा की ओर देखने के बदले रागादि तुच्छ विकारीभावों की ओर देखेगा, उन्हीं के परिचय में अटक जायेगा तो यह तेरे चैतन्य परमेश्वर का अनादर होगा, उसकी विराधना होगी।

अरे भाई! अनुभूति में परमात्मा के शुभागमन के इस मंगल अवसर पर तू राग के संग में मत रुक। राग का आदर करने से तुझे बोधि की प्राप्ति नहीं होगी, परमात्मा के आदर से बोधि की प्राप्ति होगी; क्योंकि उसमें बोधि प्रदान करने की सामर्थ्य है; इसलिए स्वभाव-सन्मुख होकर अखण्ड बोधि की भावना कर। यही भावना मोक्ष सुख की दातार है।

इसप्रकार बोधिदुर्लभ भावना का वर्णन पूरा हुआ। •

आत्मा का स्वभाव जैसा है, वैसा न मानकर अन्यथा मानना, अन्यथा ही परिणमन करना चाहना ही अनन्त वक्रता है। जो जिसका कर्ता-धर्ता नहीं है, उसे उसका कर्ता-धर्ता-हर्ता मानना ही अनन्त कुटिलता है। रागादि आस्रवभाव दु:खरूप एवं दु:खों के कारण हैं, उन्हें सुखस्वरूप एवं सुख का कारण मानना; तद्रूप परिणमन कर सुख चाहना; संसार में रंचमात्र भी सुख नहीं है, फिर भी उसमें सुख मानना एवं तद्रूप परिणमन कर सुख चाहना ही वस्तुत: कुटिलता है, वक्रता है।

इसीप्रकार वस्तु का स्वरूप जैसा है वैसा न मानकर, उसके विरुद्ध मानना एवं वैसा ही परिणमन करना चाहना विरूपता है।

– चिन्तन की गहराईयाँ, पृष्ठ 64

नियमसार प्रवचन –

आत्मध्यान ही प्रत्याख्यान है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ९५ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

मोत्तूण सयलजप्पमणागयसुहमसुहवारणं किच्चा।
अप्पाणं जो झायदि पच्चक्खाणं हवे तस्स।।९५।।

(हरिगीत)

सब तरह के जल्प तज भावी शुभाशुभ भाव को।
जो निवारण कर आत्म ध्यावे उसे प्रत्याख्यान है।।९५।।

सम्पूर्ण जल्प अर्थात् सम्पूर्ण वचन विस्तार को छोड़कर और भावी शुभ-अशुभ भावों का निवारण करके जो मुनिराज आत्मा को ध्याते हैं, तब उन मुनिराजों को प्रत्याख्यान होता है।

(गतांक से आगे....)

(मंदाक्रांता)

सम्यग्दृष्टिस्त्यजति सकलं कर्मनोकर्मजातं
प्रत्याख्यानं भवति नियतं तस्य संज्ञानमूर्तेः।
सच्चारित्राण्यघकुलहराण्यस्य तानि स्युरुच्चैः
तं वंदेहं भवपरिभवक्लेशनाशाय नित्यम्।।१२७।।

(हरिगीत)

जो ज्ञानि छोड़े कर्म अर नोकर्म के समुदाय को।
उस ज्ञानमूर्ति विज्ञजन को सदा प्रत्याख्यान है।।
और सत् चारित्र भी है क्योंकि नाशे पाप सब।
वन्दन करूँ नित भवदुखों से मुक्त होनेके लिए।।१२७।।

जो सम्यग्दृष्टि समस्त कर्म-नोकर्म के समूह को छोड़ता है, उस सम्यग्ज्ञान की मूर्ति को सदा प्रत्याख्यान है और उसे पापसमूह का नाश करनेवाले ऐसे सत्-चारित्र अतिशयरूप से हैं। भव-भव के क्लेश का नाश करने के लिये उसे मैं नित्य वन्दन करता हूँ।

आत्मा ज्ञान की मूर्ति है – ऐसा अन्तर्भान होने के पश्चात् उसमें लीनता होने पर राग का त्याग होता है। जैसे बिना भूमि वृक्ष नहीं होता, वैसे ही आत्मा के भान बिना प्रत्याख्यान नहीं होता। जैसे भूमि हो और वृक्ष न हो – ऐसा तो होता है; वैसे ही सम्यग्दर्शन हो और व्रत न हो – ऐसा होता है। जिस सम्यग्दृष्टि को कर्म-नोकर्म से भिन्न चैतन्यवस्तु का भान हो गया; वह कर्म-नोकर्म के समूह को छोड़कर जब चैतन्य में लीन होता है, तब उसे सदा प्रत्याख्यान है।

जो अपना मूलस्वरूप न हो, उसका ही त्याग होता है; क्योंकि जो अपना मूलस्वरूप हो, उसका त्याग हो ही नहीं सकता। जो सम्यग्दृष्टि अपने ज्ञानानन्दस्वरूप को जानता हुआ उसमें लीन होता है, वह सम्यग्दृष्टि सम्यग्ज्ञान की मूर्ति है और उसे सदा ही राग का त्याग वर्तता है। यहाँ तो प्रत्याख्यान सिद्ध करना है, इसलिये राग के त्याग करने की बात की है; दृष्टि के विषय में तो आत्मा को रागादि का ग्रहण-त्याग है ही नहीं।

अज्ञानी बाह्यत्याग में धर्म मान बैठे हैं; किन्तु यहाँ तो कहते हैं कि प्रथम आत्मा का भान करके मिथ्यात्व के अधर्म को तो छोड़! मिथ्यात्व को त्यागे बिना प्रत्याख्यान होता ही नहीं; इसीलिए सर्वप्रथम सम्यग्दर्शन की ही बात ली है। जिसको चैतन्यस्वभाव की दृष्टि हुई है और जो उसी में स्थिर हुआ है, उस ज्ञानमूर्ति को ही प्रत्याख्यान होता है।

यहाँ टीकाकार कहते हैं कि अहो! मैं उसकी नित्य वंदना करता हूँ। स्वयं भी मुनिदशा में झूलते हैं और साधर्मी के प्रति उल्लास से कहते हैं कि अहो! जो आत्मा का भान करके स्वरूप में स्थिर हुये हैं; भव-भय के नाश करने के लिए मैं उनकी वंदना करता हूँ।

मुनि का सत्चारित्र पुण्य-पाप दोनों का नाश करनेवाला है। स्वभाव में एकाग्रता से वीतरागदशा का प्रगट होना ही सत्चारित्र है और वह सत्चारित्र भव-भव के क्लेश का नाशक है। ऐसे सत्चारित्र को प्रगट करनेवाले शान्तरस के बिम्ब मुनिराज को मैं नित्य वंदन करता हूँ - ऐसा कहकर आचार्यदेव ने अपना प्रमोद दर्शाया है।

नियमसार गाथा ९६

केवलणाणसहावो केवलदंसणसहावसुहमइओ।
केवलसत्तिसहावो सो हं इदि चिंतए णाणी ॥९६॥

(हरिगीत)

ज्ञानी विचारें इसतरह यह चिन्तवन उनका सदा।
केवल्यदर्शन-ज्ञान-सुख-शक्तिस्वभावी हूँ सदा ॥९६॥

ज्ञानी इसप्रकार चिन्तवन करते हैं कि मैं केवलज्ञानस्वभावी हूँ, केवलदर्शनस्वभावी हूँ, मैं सुखमय (केवलसुखस्वभावी) हूँ और केवल-शक्तिस्वभावी हूँ।

अब इस गाथा में ज्ञानी जीव आत्मा का चिंतन कैसे करते हैं - इसकी बात करते हैं।

मैं त्रिकाल केवलज्ञान की मूर्ति हूँ, दृष्टास्वभावी हूँ, आनन्दमय हूँ और केवलशक्ति स्वभावी हूँ, आत्मबल से भरपूर हूँ, अपने अनन्तगुणों की स्वरूप-रचना के सामर्थ्य से परिपूर्ण हूँ - इसप्रकार अपने आत्मा का ज्ञानी चिंतवन करता है। यहाँ विकल्प की बात नहीं है; बल्कि आत्मा में एकाग्र होने वाले ज्ञानी को प्रत्याख्यान होता है - यह बात है।

यहाँ अनन्तचतुष्टयात्मक अपने आत्मा के ध्यान का उपदेश है।

जैसे अटैची में कस्तूरी रखी हो तो उसके पास रखी हुई पुस्तक के पृष्ठ-पृष्ठ में उसकी गन्ध बस जाती है, वैसे ही आत्मभान रहित अज्ञानी की पर्याय-पर्याय में पुण्य-पाप की वासना बस गई है। पर की क्रिया को

मैं करूँ और पुण्य-पाप की क्रिया से लाभ होगा - ऐसी अज्ञान और मिथ्यात्व की गन्ध अज्ञानी जीव को अनादि से लगी है।

चैतन्यस्वभाव का भान होने पर जिसे समस्त बाह्य प्रपंच की वासना छूट गई है और निःशेषरूप से जो अन्तर्मुख हुआ है, ऐसे परमतत्त्वज्ञानी जीव को यहाँ आत्मध्यान की सीख दी गई है; क्योंकि उसी को आत्मध्यान होता है। ज्ञानी तो चिदानन्द आत्मा की भावना करता है, बाहर में संयोग अनुकूल हों तो धर्म हो और प्रतिकूल हों तो धर्म न हो - ऐसा नहीं है। चैतन्यवस्तु बाहर के समस्त पदार्थों से भिन्न है, इसलिये बाह्य पदार्थों से लाभ-हानि की बुद्धि छोड़कर अन्तर्मुख हो जाना चाहिए। जो जीव बहिर्मुख वासना छोड़कर अन्तर्मुख हुआ है, उसे ही यहाँ शुद्धात्मा की भावना करने के लिए कहा है। जिसे अभी आत्मा का भान भी न हो, वृत्ति का ठिकाना न हो, मात्र बाह्य त्याग से प्रत्याख्यान मान ले, उसकी तो यहाँ बात ही नहीं है।

यहाँ तो कहते हैं कि जिसको आत्मा का भान है, जो आत्मा में अन्तर्मुख है - ऐसे परमतत्त्वज्ञानी जीव को शुद्धात्मभावना का उपदेश है। **(क्रमशः)**

जर्नलिस्ट अखिल बंसल को डॉक्टरेट

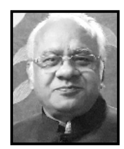

जयपुर (राज.) : जैन पत्रकारिता के पुरोधा समन्वय वाणी (पाक्षिक) के संपादक, अनेक पुस्तकों के लेखक जर्नलिस्ट अखिल बंसल ने जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनूं से पी-एच.डी.(विद्या वारिधि) की उपाधि प्राप्त की। आपने डॉ. शक्तिदान चारण के निर्देशन व डॉ. संयमप्रकाश जैन के सह-निर्देशन में 'आचार्य विद्यानंद एवं आचार्य महाप्रज्ञ के आध्यात्मिक चिंतन का विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकार्य किया है। शोधकार्य में डॉ. बी.एल. सेठी, जयपुर का विशेष सहयोग रहा।

स्मरण रहे कि अखिल बंसल अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ, अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् तथा राष्ट्रीय दिगम्बर जैन प्रतिनिधि महासंघ के महामंत्री तथा अथाई-आशा इन्टरनेशनल के संस्थापक निदेशक हैं। आपके द्वारा संपादित पूजन की पुस्तक जिनेन्द्र अर्चना ढाई लाख से अधिक की संख्या में प्रकाशित होकर जन-जन तक पहुँच चुकी है। आपको अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। **- अंशुल जैन, जयपुर**

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

सर्वदर्शित्व शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमश: प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

भाई! **स्व-आश्रय से ही जो ज्ञान प्रगट होता है, उसे ज्ञान परिणति कहते हैं, वह उसे नहीं है।**

अध्यात्म पंचसंग्रह में दृष्टान्त दिया है - सीताजी को छुड़ाने के लिए लक्ष्मणजी ने रावण के साथ युद्ध किया, तब रावण ने लक्ष्मणजी को शक्ति मारी तो लक्ष्मण बेहोश हो गये। उस प्रसंग पर रामचन्द्रजी मूर्छित हुए लक्ष्मणजी को संबोधते हुए कहते हैं -

'हे लक्ष्मण! सीताजी को रावण ले गया। तू ऐसा बेहोश हो गया। अब मैं माता को क्या जवाब दूँगा? इसलिए हे भाई! जाग! बन्धु! एक बार बोल!'

इस तरह शोकातुर होकर रामचन्द्रजी विलाप करते हैं। तब कोई निमित्त ज्ञानी ने उन्हें कहा -

'भरत के राज्य में एक राजा की एक कुँवारी कन्या विशल्या है, उसे लब्धि प्रगट है कि उसके स्नान का पानी लक्ष्मणजी पर छिड़का जावे तो लक्ष्मणजी मूर्छा तजकर तत्काल बैठ जायेंगे।'

वह विशल्या कौन है? वह पूर्व भव में चक्रवर्ती की पुत्री थी, उसे कोई हरण करके ले गया और जंगल में छोड़ दिया, वहाँ एक बड़ा अजगर उसे निगल गया, थोड़ा-सा मुँह बाहर रहा था कि इतने में उसका

पिता उसे खोजने जंगल में आ पहुँचा। उसने बाण से अजगर को मारने की तैयारी की तो कन्या ने पिता से कहा -

पिताजी! अजगर को मारना नहीं; क्योंकि मैंने तो जीवनपर्यन्त अन्न-जल का त्याग कर दिया है। अब मैं किसी भी प्रकार बच तो सकती नहीं, इसलिए अजगर को व्यर्थ ही क्यों मारना?

आहाहा...! कैसी दृढ़ता! और कैसी करुणा! कन्या मरकर भरत के राज्य में एक राजकन्या के रूप में विशल्या हुई है।

सैनिकों! उस कन्या को ले आओ। विशल्या ने ज्यों ही लश्कर के पड़ाव में प्रवेश किया कि घायल सैनिकों के घाव क्षणमात्र में ही अपने आप सूखने लगे तथा विशल्या के स्नान का पानी जहाँ लक्ष्मणजी पर छिड़का कि तुरन्त लक्ष्मणजी की मूर्छा टूट गई, होश में आकर एक क्षण में ही लक्ष्मण खड़े हो गये और बोले 'कहाँ गया रावण?' बाद में उसी विशल्या के साथ लक्ष्मणजी की शादी हुई।

यहाँ सिद्धान्त यह है कि - **त्रिकाल ज्ञानानन्द-सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान आत्मा जब निर्मल परिणतिरूपी रमणी के साथ जुड़ता है,** तब अनन्त गुणरूप शक्ति पर्याय में खिल जाती है। यहाँ 'परिणति' कहा है। शक्ति पर्याय में न खिले, कार्यरूप न परिणमे तो भले अन्दर में पड़ी हो, उससे क्या लाभ?

सर्वदर्शित्वशक्ति देखने रूप परिणति कही है, इसलिए प्रगट निर्मल पर्याय सहित शक्ति की बात है और वह प्रगटता आत्मदर्शनमय है, परदर्शनमय नहीं है।

यह अध्यात्म वाणी बहुत सूक्ष्म है भाई! जो शुभभाव में धर्म मानकर सन्तुष्ट है, उसके गले यह बात कैसे उतरे? परन्तु शुभभाव इस जीव ने अनन्त बार किया है। नव में ग्रैवेयक के अहमिन्द्र पद को भी पाया - ऐसी शुक्ललेश्या के परिणाम भी इस जीव ने अनन्त बार किये हैं।

छहढाला में कहा है ना –

मुनिव्रत धार अनन्त बार ग्रीवक उपजायो।

अहा! शुक्ललेश्या भिन्न चीज है और शुक्लध्यान भिन्न चीज है। शुक्ल ध्यान तो भावलिंगी मुनिवर को श्रेणी चढ़ते समय होता है, जबकि शुक्ललेश्या के परिणाम तो अभव्य को भी होते हैं।

अति उज्ज्वल अति मंदकषायरूप परिणाम वह शुक्ललेश्या है। शुक्ललेश्यावाला जीव छठवें देवलोक तक जाता है और नव में ग्रैवेयक जानेवाले जीव के तो बहुत ऊँचे शुक्ललेश्या के शुभभाव मंदकषायरूप होते हैं।

छठवें स्वर्ग में सम्यग्दृष्टि जाए तो उसे भी शुक्ललेश्या के भाव होते हैं। **नव में ग्रैवेयक को जानेवाले जीव के भाव तो बहुत ऊँचे हैं, फिर भी वह धर्म नहीं। वह तो कषाय का ही अंग है, आकुलतामय है; वह धर्मरूप नहीं और धर्म का कारण भी नहीं।**

आचार्यदेव ने शक्तियों का सूक्ष्म और अलौकिक वर्णन किया है। क्रमरूप परिणत और अक्रमरूप प्रवर्तता अनन्त धर्मों के समुदाय को यहाँ आत्मा कहा है। अकेली शक्तियाँ पड़ी हैं ऐसा नहीं है।

श्रीमद्‌राजचन्द के एक पत्र में आता है कि – चौथे गुणस्थान में सम्यग्दृष्टि को श्रद्धा अपेक्षा से केवलज्ञान हुआ है, जबकि केवलज्ञान का परिणमन तो तेरहवें गुणस्थान में होगा, परन्तु चतुर्थ गुणस्थान वाले को अपने श्रद्धान में केवलज्ञान की प्रतीति हुई है – इसकारण ऐसा कहा है। **शक्ति के अंशरूप और पूर्णस्वरूप की प्रगटता का सम्यग्दृष्टि को यथार्थ ज्ञान-श्रद्धान होता है। इसलिए श्रद्धापने समकिती को केवलज्ञान और मोक्ष हुआ है – ऐसा कहा जाता है।**

आहाहा...! **जहाँ अपने निधान पर नजर जाती है कि तुरन्त निर्मल**

(शेष पृष्ठ 29 पर ...)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : अनुभूति में और ज्ञान में क्या अंतर है ?

उत्तर : ज्ञान में तो सम्पूर्ण आत्मा जाना जाता है और अनुभूति में तो पर्याय का ही वेदन होता है, द्रव्य का वेदन नहीं होता।

प्रश्न : आत्मा में अनंत गुण हैं; उस गुणभेद का लक्ष छोड़ने से निर्विकल्पता होती है, तो उन अनंत गुणों का ज्ञान चला नहीं जाता?

उत्तर : आत्मा में अनंत गुण हैं, उनका ज्ञान करके उनके भेद का लक्ष छोड़ने से ज्ञान चला नहीं जाता; भेद का विकल्प छूटकर दृष्टि अभेद होने से निर्विकल्पता में अनंत गुणों का स्वाद आता है- अनुभव होता है।

समयसार की 7वीं गाथा की टीका में कहा है-अनंत पर्यायों को एक द्रव्य पी गया है, वहाँ पर्याय शब्द से सहवर्ती गुण कहे हैं। समयसार की 294 वीं गाथा की टीका में भी सहवर्ती गुणों को पर्याय शब्द से कहा है। अनंत गुणों को द्रव्य पी गया है अर्थात् अनंत गुणमय अभेदरूप एक अखण्ड आत्मा है।

आत्मा शुद्ध चैतन्यमूर्ति अखण्ड अभेद एकरूप है। उसमें यह अशुद्ध पर्यायवाला आत्मा और यह शुद्ध पर्यायवाला आत्मा – इसप्रकार एकरूप आत्मा में दो भेद करना कुबुद्धि है। जो एकरूप ज्ञायकभाव में यह बहिरात्मा और यह अन्तरात्मा- ऐसे भेद करता है, वह पर्यायबुद्धि है। शुद्ध निश्चयनय का विषय त्रिकालशुद्ध एकरूप आत्मा पर्यायरहित है, उसमें पर्याय-भेद करने का विकल्प करता है (दृष्टि करता है), वह मिथ्यादृष्टि है।

प्रश्न : पर्याय के भेद जानने में तो आते हैं न ?

उत्तर : पर्याय का यथायोग्य ज्ञान करना तो ठीक है, परन्तु जो शुद्ध अखण्ड अभेद आत्मा को पर्याय के भेदरूप मानता है, उसे कुबुद्धि कहा है।

प्रश्न : पर्याय को द्रव्य से कथंचित् अभिन्न कहा है न ?

उत्तर : सम्पूर्ण द्रव्य को प्रमाणज्ञान से देखने पर पर्याय कथंचित् भिन्न है और कथंचित् अभिन्न है-ऐसा कहा जाता है, परन्तु शुद्धनय के विषयभूत त्रिकाली ध्रुव की अपेक्षा से देखने पर वास्तव में द्रव्य से पर्याय भिन्न ही है, पर्यायार्थिकनय से देखने पर पर्याय द्रव्य से अभिन्न है। प्रयोजन की सिद्धि के लिए तो पर्याय को गौण करके, अविद्यमान ही मानकर, त्रिकाली ध्रुवस्वभाव को मुख्य करके भूतार्थ का आश्रय कराया है।

प्रमत्त पर्याय परद्रव्य के निमित्त से मलिन होती है- ऐसा तो कहा ही है, परन्तु अप्रमत्त पर्याय को भी परद्रव्य के संयोगजनित कह दिया है। औदयिकादि चार भावों को आवरणयुक्त कहा है। केवलज्ञान की क्षायिक पर्याय भी कर्मकृत (पंचास्तिकाय में) कही है, क्योंकि उसमें कर्म के अभाव की अपेक्षा आती है। चार भाव ज्ञायकस्वभाव में नहीं हैं, कर्म की अपेक्षा आने से उन्हें कर्मकृत कहा है।

भगवान के कहे हुए द्रव्य-गुण-पर्याय के स्वरूप का प्रतिपादन करने में समर्थ ऐसे द्रव्यलिंगी मुनि द्रव्य-गुण-पर्यायादि में तो चित्त को लगाते हैं, परन्तु नित्यानंद प्रभु निज कारणपरमात्मा में चित्त को कभी नहीं जोड़ते, इसलिये वे अन्यवश हैं। वे ऐसे विकल्पों के वश होने से अन्यवश हैं। जो द्रव्य-गुण-पर्याय के विकल्प में चित्त को लगाता है, वह विष का प्याला पीता है और जो नित्यानंद निज कारणपरमात्मा में चित्त को लगाता है, वह अनाकुल आनन्द रस के प्याले पीता है। ●

समाचार दर्शन -

ब्र. यशपालजी जैन की श्रद्धांजलि सभा

● एक और विद्वान का परलोक-गमन ● पूरे देश में शोक की लहर ● कण्ठपाठ के जनक नहीं रहे ● मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति

करणानुयोग के प्रखर विद्वान, कण्ठपाठ के जनक, सरल हृदयी, अनेक पुस्तकों के रचयिता ब्र. यशपालजी जैन (अन्नाजी) का दिनांक 5 मार्च को 85 वर्ष की आयु में अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आपकी स्मृति में श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 मार्च को दो सत्रों में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। प्रात:काल सर्वप्रथम अन्नाजी की कक्षा का वीडियो प्रसारण किया गया, तत्पश्चात् उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का परिचय डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने दिया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने प्रत्यक्ष उपस्थित होकर एवं पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, श्री अनंतभाई ए. शेठ मुम्बई (श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट), पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा (मुमुक्षु आश्रम एवं प्राचार्य-धरसेन महाविद्यालय), डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा (प्राचार्य-अकलंकदेव महाविद्यालय), श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर (अध्यक्ष-दिग. जैन महासमिति), श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई (महामंत्री-श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट), श्री अजितजी जैन बड़ौदा, श्री बी.टी. बेडके (संचालक-बाहुबली गुरुकुल), डॉ. सुदीपजी शास्त्री दिल्ली, श्री चम्पालालजी भण्डारी बैंगलोर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित जम्बूकुमारजी चेन्नई, डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा, श्री आर.के.जैन मुम्बई, पण्डित महावीरजी पाटील सांगली, विदुषी धवलश्री ताई बेलगांव आदि महानुभावों ने ऑनलाइन उपस्थित होकर अन्नाजी के बारे में अपने उद्गार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने किया।

द्वितीय सत्र के अन्तर्गत पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, पण्डित बाहुबलीजी भोसगे, पण्डित जिनचंदजी आलमान हेरले, श्री गुलाबचंदजी बोरालकर एलोरा, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, डॉ. नेमिनाथजी बालीकाई, पण्डित शान्तिनाथजी पाटील पुणे, पण्डित श्रुतेशजी सातपुते नागपुर, पण्डित अनंतजी विश्वंभर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित नितिनजी कोठेकर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित अनिलजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जितेन्द्रजी राठी पुणे, पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित किशोरजी शास्त्री बैंगलोर, पण्डित दीपकजी अथणे इचलकरंजी, पण्डित जितेन्द्रजी चौगुले, पण्डित संयमजी शेटे कोल्हापुर, अमन जैन आरोन, श्री रावसाहेबजी नरदेकर, श्री प्रशांतजी काले, श्री प्रदीपजी गंगवाल इन्दौर, विदुषी प्रतीति मोदी नागपुर आदि महानुभावों ने अन्नाजी के बारे में अपने मनोगत व्यक्त किये। सभा का संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया।

इसके अतिरिक्त देश के अनेक स्थानों पर भी श्रद्धांजलि सभाएं आयोजित हुईं।

(ट्रस्ट व समाज हेतु दिये गये योगदान को स्मरण करते हुए आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक का अगला अंक (17 मार्च-2 अप्रैल) ब्र.यशपाल जैन (अन्नाजी) विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।)

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में पंचतीर्थ जिनालय का -

नवम् वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 26 फरवरी से 28 फरवरी तक नवम् वार्षिकोत्सव अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दिनांक 26 फरवरी को प्रात: डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार महामण्डल विधान के उपरान्त उद्घाटन सभा हुई, तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'समयसार' विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी ओसवाल परिवार 'पीतल फैक्ट्री' जयपुर द्वारा ध्वजारोहण करके किया गया। मंच उद्घाटन श्री ताराचंदजी सौगानी जयपुर ने किया। समारोह का उद्घाटन श्रीमती भारतीबेन-विजयभाई जैन दादर-मुम्बई द्वारा किया गया। सभी अतिथियों का सम्मान श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर थे। अतिथियों में श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री साकेतजी जैन सिंगापुर, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री संजयजी दीवान सूरत, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर, श्री शांतिलालजी गंगवाल सी.ए. जयपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे। आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र अनावरणकर्ता श्रीमती कविता-प्रकाशचंदजी छाबड़ा सूरत, पण्डित टोडरमलजी के चित्र अनावरणकर्ता श्री चक्रेशकुमार अशोककुमार सुशीलकुमार (मुन्नाभाई) बजाज परिवार कोलकाता एवं गुरुदेवश्री के चित्र अनावरणकर्ता श्री कान्तिभाई मोटानी परिवार से श्री हितेनभाई मोटानी थे।

मंगलाचरण दिव्यांश जैन अलवर ने एवं मंच संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने किया।

महोत्सव के आमंत्रणकर्ता श्री श्रीमती भारतीबेन-विजयभाई जैन (हाथरसवाले) दादर-मुम्बई थे। श्री समयसार महामंडल विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती कुसुम-महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर, श्रीमती कल्पना-नरेन्द्रजी बड़जात्या जयपुर, श्री शान्तिलालजी चौधरी, भीलवाड़ा श्रीमती श्रीकान्ताबाई छाबड़ा जयपुर, श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल, टोडरमल स्मारक जयपुर थे।

महोत्सव में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल**, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई के प्रवचनों का लाभ मिला।

श्री समयसार महामंडल विधान के समस्त कार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री, पण्डित रिमांशुजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये।

दिनांक 27 फरवरी को प्रात: परमागम ऑनर्स द्वारा 'सहजता का अन्तर्द्वन्द' पर संगोष्ठी संपन्न हुई। दिनांक 26 व 27 फरवरी की दोपहर को टोडरमल महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों एवं स्नातक विद्वानों द्वारा विशेष गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दिनांक 28 फरवरी को प्रात:काल **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** के प्रवचन के उपरांत सीमंधर जिनालय एवं पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान सभी जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक का मंगलमयी आयोजन किया गया।

मस्तकाभिषेक के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ, श्री सुशीलकुमारजी गोदिका परिवार जयपुर, डॉ. एस.के. काला जयपुर, श्री शांतिलालजी गंगवाल (सी.ए.) जयपुर, श्री लक्ष्य छाबड़ा मोतीसन्स परिवार जयपुर, श्री मनोजजी बंघेला परिवार सागर, श्री प्रशांतजी मस्ताई परिवार, श्री शैलेन्द्रजी जैन, श्री संजयजी सेठी जयपुर, श्री नरेन्द्रजी बड़जात्या जयपुर, श्री हीराचंदजी बैद जयपुर आदि महानुभावों ने सर्वप्रथम मस्तकाभिषेक का लाभ प्राप्त किया।

महोत्सव का सीधा प्रसारण यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर किया गया, जिसके माध्यम से हजारों साधर्मियों ने लाभ लिया। ●

समयसार : कहान शताब्दी महोत्सव का उद्घाटन

इन्दौर (म.प्र.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी को ग्रंथाधिराज समयसार मिलने के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 'समयसार : कहान शताब्दी महोत्सव' मनाया जा रहा है, जिसका उद्घाटन समारोह दिनांक 13 मार्च को रवीन्द्र नाट्य गृह में भव्यतापूर्वक किया गया।

कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री अजितप्रसादजी दिल्ली एवं श्री निरंजन भाई डेलीवाला एकल्या द्वारा हुआ। तत्पश्चात् गुरुदेवश्री का सी.डी प्रवचन एवं पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया द्वारा प्रासंगिक व्याख्यान हुए। पालकी पर श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा द्वारा समयसारजी विराजमान हुये।

महोत्सव का उद्घाटन श्री अनन्तभाई, श्री निमेषभाई, श्री अक्षयभाई दोशी मुम्बई, श्री हितेनभाई सेठ मुम्बई परिवार द्वारा ऑनलाइन किया गया। उद्घाटन सभा के अध्यक्ष श्री विमलजी जैन (नीरू केमिकल्स) दिल्ली, मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली, श्री चंपालालजी भंडारी बैंगलोर, श्री सुशीलजी बजाज कोलकाता, श्री अशोकजी बड़जात्या इंदौर, श्री अशोकजी भोपाल, श्री निरंजनभाई सुरेंद्रनगर, डॉ. किरणजी शाह, श्री सुरेंद्रजी गांधी पुणे, श्री सुनीलजी सर्राफ

सागर, श्री मुकेशजी करेली, श्री अगमजी जैन (पुलिस अधीक्षक) इंदौर, श्री केशवदेवजी कानपुर, श्री देवेंद्रजी बड़कुल भोपाल, श्री नीरजजी केरल, श्री मनोजजी बंगेला सागर, श्री सुधीरजी कटनी, श्री अनिलजी उज्जैन, डॉ. अशोकजी इंदौर, श्री प्रतीकजी गांधी इंदौर, डॉ. रवीशजी सनावद, श्री संजय प्रेमी-राकेश प्रेमी पिड़ावा, श्री दिलीपजी सेठी झालरापाटन आदि अनेक अतिथियों के साथ ब्र. हेमचन्दजी हेम देवलाली, डॉ. मुकेशजी 'तन्मय' विदिशा, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र. नन्हे भैया सागर, पण्डित अनिलजी पाटोदी बड़नगर, पण्डित रमेशजी दाऊ जयपुर, पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ़, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित सुदीपजी शास्त्री मुम्बई एवं विदुषी राजकुमारी दीदी सनावद आदि विद्वानों की उपस्थिति में सभा आयोजित की गई। श्री पदमजी पहाड़िया इंदौर द्वारा स्वागत भाषण हुआ एवं युवा फैडरेशन इंदौर के माध्यम से सभी अतिथि-विद्वानों का तिलक-माल्यार्पण, अंगवस्त्र के माध्यम से स्वागत किया गया।

सभा में ऑनलाइन उपस्थित अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमने अपना जीवन तो समयसार के लिए ही समर्पित किया है; समयसार अनुशीलन, समयसार विधान आदि की रचना की, जिसका लाभ सम्पूर्ण समाज ले रहा है। उन्होंने इस आयोजन की भूरी-भूरी प्रशंसा की। ऑनलाइन उपस्थित श्री वसन्तभाई दोशी मुम्बई, श्री पवनजी मंगलायतन, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि द्वारा भी उद्बोधन प्राप्त हुए। कार्यक्रम में श्री अजितभाई बड़ोदरा, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री विजयभाई दादर, श्री आलोकजी कानपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर आदि अनेक अतिथि एवं विद्वान ऑनलाइन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंतर्गत तीर्थधाम ज्ञानोदय द्वारा प्रकाशित समयसारजी ग्रंथ, महोत्सव वर्ष लोगो, समयसार विज्ञान वाटिका, समयसार कैलेण्डर, महोत्सव वर्ष का वार्षिक ब्रोशर, आराधनासार, वारसाणुवेक्खा, समयसार : बाल वाटिका, चहकती चेतना कैलेण्डर, सामायिक स्वरूप एवं ध्यान विधि आदि अनेक विमोचन हुये।

महोत्सव वंदना रथ का उद्घाटन श्री विमलजी (नीरू केमिकल्स) दिल्ली द्वारा एवं महोत्सव स्तम्भ का विमोचन श्री सुशीलजी बजाज कोलकाता द्वारा हुआ। ब्र. यशपालजी (अन्नाजी) की स्मृति में समयसार कंठपाठ योजना की घोषणा हुई। समयसार वर्ष हेतु समयसार गीत की रचना की गई एवं समयसार गीत का लोकार्पण हुआ।

सभा का संचालन महोत्सव के निर्देशक ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद, पण्डित रजनीभाईजी हिम्मतनगर एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा किया गया।

वार्षिकोत्सव में संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित नवम् वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत दिनांक 26 फरवरी को दोपहर में टोडरमल महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा **आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी एवं उनका मोक्षमार्गप्रकाशक** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने की।

कार्यक्रम का मंगलाचरण शिवराज स्वामी मानगांव, संचालन संभव जैन दिल्ली एवं आभार प्रदर्शन रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाड़ा ने किया।

● दिनांक 27 फरवरी को दोपहर में टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक विद्वानों द्वारा **जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में पण्डित टोडरमलजी का योगदान** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के विशेषज्ञ विद्वान डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर थे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने क्या मोक्षमार्गप्रकाशक को पूरा नहीं किया जा सकता है विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण एवं संचालन पण्डित समर्थजी शास्त्री विदिशा ने किया।

(पृष्ठ 22 का शेष ...)

दशा प्रगट होती है। उसमें विकार की गंध भी नहीं। जो निर्मलपर्याय प्रगटी वह भावरूप है, उसमें विकार भाव का अभाव है, इसका नाम अनेकान्त है। **शक्ति अन्दर पड़ी है, उसके सन्मुख होते ही खिल जाती है।** अपनी परिणतिरूपी रमणी के साथ अन्दर में एकाग्र होकर रमणता करने से वह निराकुल आनन्द का भोग देती है।

आहाहा...! ऐसा है आनन्द का जन्म स्थान! इसका नाम धर्म और यही मोक्ष का मार्ग है। बाकी तो सब व्यर्थ है। इस शक्ति के वर्णन में दो बातें मुख्य हैं। **शक्ति को परिणमती हुई कहा है और वह आत्मदर्शनमयी है, परदर्शनमयी नहीं।**

इसप्रकार इस सर्वदर्शित्वशक्ति का वर्णन पूर्ण हुआ। ●

कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत –

श्री समयसार मण्डल विधान एवं कीर्ति स्तम्भ शिलान्यास महोत्सव संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 20 से 25 फरवरी तक श्री समयसार मंडल विधान एवं कीर्ति स्तम्भ शिलान्यास महोत्सव संपन्न हुआ।

महोत्सव का ध्वजारोहण श्रीमती निशा ध.प. श्री प्रमोदजी मस्तांई परिवार द्वारा हुआ। महोत्सव में प्रतिदिन प्रात: समयसार मंडल विधान आयोजित हुआ। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजयजी सिद्धार्थी एवं पण्डित समकितजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समयसार पर सी.डी. प्रवचन के साथ-साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा समयसार का सार विषय पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। दोपहर में कु. लब्धि जैन द्वारा समयसार कलशों का पाठ एवं विभिन्न विद्वानों द्वारा समयसार के एक-एक अधिकार पर संगोष्ठी संपन्न हुई। सायंकाल पण्डित सचिनजी सागर एवं पण्डित अखिलेशजी घुवारा के निर्देशन में अनेक विद्वानों द्वारा बाल कक्षाएं संचालित हुईं। तत्पश्चात् जिनेन्द्र भक्ति एवं पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा समयसार पर व्याख्यान हुये। रात्रि में प्रवचनोपरांत डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन में देश के विशिष्ट विद्वानों द्वारा समयसार ग्रंथ पर विशेष परिचर्चा का आयोजन किया गया।

घर-घर समयसार हर घर समयसार – कहान सम्प्राप्ति वर्ष के उपलक्ष्य में 150 घरों में ग्रन्थाधिराज समयसार और मंगल कलश विराजमान हुआ। 'घर-घर समयसार हर घर समयसार' के अन्तर्गत श्रीमती कुसुम ध.प. महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर द्वारा मुख्य कलश एवं श्रीमती राजकुमारी ध.प. सेवकचंदजी बड़ामलहरा द्वारा समयसार विराजमान किया गया। स्वानुभव स्वाध्याय मंडल औरंगाबाद के सभी सदस्यों द्वारा अपने घरों में समयसार विराजमान किया गया। साथ ही ऑनलाइन भी सैंकड़ों घरों में ग्रन्थाधिराज समयसार विराजमान हुये।

कीर्तिस्तम्भ का शिलान्यास – तीर्थधाम सिद्धायतन के द्विदशाब्दी वर्ष के अवसर पर बनने वाले कीर्ति स्तम्भ में ग्रन्थाधिराज समयसार की 100 गाथाएं अंकित की जायेगी और बुन्देलखण्ड में जैनसमाज के प्रचार-प्रसार में योगदान देने वाले विशिष्ट लोगों के नाम अंकित किये जाएंगे। पण्डित अभयकुमारजी देवलाली एवं पण्डित राजकुमारजी उदयपुर की प्रेरणा से स्तंभ का शिलान्यास संस्था के संस्थापक अध्यक्ष श्री चन्द्रभानजी जैन घुवारा परिवार तथा श्री इन्द्रजीत महेन्द्रजी गंगवाल परिवार इन्दौर की ओर से पण्डित अभयजी देवलाली एवं पण्डित अशोकजी जबलपुर द्वारा संपन्न हुआ।

सिद्धायतन सिद्धार्थी परिषद् का शपथ ग्रहण – बुन्देलखण्ड के सोनगढ तीर्थधाम सिद्धायतन में विगत 20 वर्षों से संचालित श्री समन्तभद्र शिक्षण संस्थान के सभी भूतपूर्व एवं वर्तमान छात्रों की सहमति से सिद्धायतन सिद्धार्थी परिषद् का गठन संपन्न हुआ। परिषद् के माध्यम से विभिन्न तात्त्विक व सामाजिक गतिविधियों का संचालन हो, इसलिये अध्यक्ष पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, महामंत्री पण्डित संजयजी सिद्धार्थी इन्दौर, मंत्री पण्डित नीलेशजी शास्त्री घुवारा, संयोजक पण्डित निलयजी शास्त्री कोटा एवं पण्डित प्रशांतजी शास्त्री सिद्धायतन, प्रचारमंत्री पण्डित अमितजी शास्त्री अरिहंत व पण्डित दीपकजी शास्त्री ध्रुव एवं सांस्कृतिक मंत्री पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर व पण्डित अखिलेशजी शास्त्री घुवारा को चुना गया। ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष एवं मंत्री श्री विनोदजी देवड़िया एवं प्रद्युम्नजी फौजदार के द्वारा सभी पदाधिकारियों को शपथ दिलायी गई।

समस्त कार्यक्रम पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली व पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर की देखरेख में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का ऑनलाइन प्रसारण सर्वोदय अहिंसा चैनल पर किया गया, जिसके माध्यम से हजारों साधर्मियों ने घर बैठे लाभ लिया।

वेदी शिलान्यास संपन्न

कानोड-उदयपुर (राज.) : यहाँ वीसा नरसिंहपुरा जैन समाज के तत्त्वावधान में नया बाजार स्थित श्री वीतराग दिगम्बर जैन मन्दिर में दिनांक 28 फरवरी को निर्माणाधीन नवीन वेदी का शिलान्यास संपन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री भगवतीलालजी, श्री प्रफुल्लकुमारजी जैन एडवोकेट, श्री दिलीपकुमारजी पटवारी, श्री लक्ष्मीलालजी जैन के अतिरिक्त अनेक साधर्मियों ने स्वर्ण, रजत एवं ताम्र पत्र शिलाएं नींव में मंत्रोच्चारपूर्वक स्थापित करके वेदी शिलान्यास किया।

विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा संपन्न हुये, जिन्होंने वेदी शिलान्यास की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। सभा के अध्यक्ष श्री मुकेशजी जैन एवं मुख्य अतिथि श्रीमती पप्पल दीदी टिमरवा ने भी सभा को सम्बोधित किया। अन्त में आभार प्रदर्शन समाज के अध्यक्ष श्री भगवतीलालजी एडवोकेट ने किया।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

केसली-सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर (बड़ा मंदिर) के प्रांगण में सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्त्वावधान में श्री महावीर स्वामी मानस्तंभ जिनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 23 से 25 फरवरी तक श्री समयसार महामंडल विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रजी जैन जबलपुर एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

कहान बाल शिविर संपन्न

सोनगढ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के तत्त्वावधान में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह के 10 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 23 से 25 फरवरी तक ऑनलाइन कहान बाल शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री अनंतराय ए. शेठ मुम्बई एवं ध्वजारोहण श्री नेमिषभाई शाह मुम्बई ने किया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी. डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री करहल द्वारा कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में एक दिन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा विशेष उद्बोधन प्राप्त हुआ। प्रात:काल जिनेन्द्र पूजन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति, रात्रि में पण्डित संजयजी जेवर द्वारा पौराणिक कथाओं का आयोजन एवं अनेक बाल प्रतिभाओं के वीडियो का प्रदर्शन भी हुआ।

शिविर के निर्देशक पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं संयोजक पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ थे। आभार प्रदर्शन विद्यालय संचालिका श्रीमती दीपा हितेनभाई शेठ ने किया।

शोक समाचार

(1) **बडोदतांगडा-जालना (महा.) निवासी श्रीमती अनिता अनंतराव अंबेकर** का दिनांक 15 सितम्बर को 52 वर्ष की आयु में समाधिमरणपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत सरल परिणामी, स्वाध्यायी, तत्त्वश्रद्धानी थीं। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक कुलभूषण अंबेकर की माताजी थीं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1001/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) **दलपतपुर-सागर (म.प्र.) निवासी श्रीमती मोहिनीजी मोदी** धर्मपत्नी श्री प्रमोदकुमारजी मोदी (**LIC**) का दिनांक 9 मार्च को आकस्मिक देहावसान हो गया।

(3) **कोटा (राज.) निवासी श्री माणकचंदजी कासलीवाल** (पूर्वमंत्री-मुमुक्षु मण्डल कोटा) का दिनांक 15 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया। आप बहुत सहज सरल और माधुर्य स्वभावी थे, आपने कोषाध्यक्ष से लेकर मंत्री तक का पदभार पूरे उत्तरदायित्व से संभाला है। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

विशेष सेमिनार संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 25 फरवरी को समयसार संगोष्ठी के अन्तर्गत सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार के आधार से विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा तत्त्व की गूढ गम्भीर चर्चा बहुत सरल सहज भाषा में संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, मुख्य अतिथि सेठ अशोकजी जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल, विशिष्ट अतिथि श्री राहुलजी गंगवाल व श्री विनीतजी गंगवाल जयुपर एवं विशेषज्ञ विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर थे।

इस अवसर पर 'समयसार को पढने का फल' विषय पर डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, 'क्रमबद्धपर्याय का स्वरूप' विषय पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, 'आत्मा के सर्वथा अकर्तृत्व का खण्डन' विषय पर पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर एवं 'करे अन्य भोगे अन्य की मान्यता का खण्डन' विषय पर विदुषी स्वानुभूति जैन मुम्बई ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री अलवर एवं संचालन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

लघु समयसार विधान संपन्न

तीर्थधाम चिदायतन- हस्तिनापुर (उ.प्र.) - यहाँ कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दि वर्ष के कार्यक्रमों की श्रृंखला में दिनांक 21 फरवरी 2021 को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित लघु समयसार विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ ने समयसार का सार समझाया।

विधान का आयोजन श्री श्रेयांस कुमार दिव्यांश कुमार जैन द्वारा प्रिय नितिन की स्मृति में किया गया, जिसमें शताधिक साधर्मियों ने हर्षोल्लासपूर्वक सम्मलित होकर लाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित निखिलजी शास्त्री मेरठ द्वारा कराये गये।

श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान संपन्न

अलवर (राज.) : यहाँ चेतन एन्क्लेव में श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री रत्नत्रय दिगम्बर जिनमंदिर में स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 21 फरवरी को श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन हुआ, जिसके आमंत्रणकर्ता श्री राजेन्द्रकुमार विनीतकुमार जैन कहान परिवार थे।

इस अवसर पर पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रवचन का लाभ मिला।

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 44 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
5. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
6. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
7. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
8. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
9. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र सभी क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो? यदि हाँ..... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को अवश्य प्रेरित करें। **प्रवेश हेतु साक्षात्कार की सूचना यथासमय दी जायेगी।**

– पण्डित जिनकुमार शास्त्री (उपप्राचार्य)
8903201647, 8072446379

तीर्थधाम ढाइद्वीप जिनायतन, इन्दौर में पंचमेरु का निर्माण कार्य चलते हुए

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2021-23*

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर..... बढ़ते चरण...

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.

द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 24 मार्च 2021

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**